10-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - जैसे बाप अपकारियों पर भी उपकार करते हैं ऐसे तुम भी फॉलो फादर करो, सुखदाई बनो, इस देह को भूलते जाओ"

प्रश्नः- देही अभिमानी रहने वाले बच्चों की मुख्य निशानियां क्या होंगी?

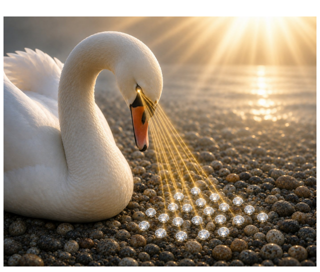

उत्तरः- 1- उनका आपस में बहुत-बहुत रूहानी प्रेम होगा। 2- वे कभी एक दो की खामियों का (कमियों का) वर्णन नहीं करेंगे। 3- वे बहुत-बहुत सुखदाई होंगे। 4- उनकी खुशी कभी गायब नहीं होगी। सदा अपार खुशी में रहेंगे। 5- कभी मतभेद में नहीं आयेंगे। 6- हम आत्मा भाई-भाई हैं, इस स्मृति से गुणग्राही होंगे, उन्हें सबके गुण ही दिखाई देंगे। वे खुद भी गुणवान होंगे और दूसरों को भी गुणवान बनायेंगे। 7- उन्हें एक बाप के सिवाए और कोई याद नहीं आयेगा।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

चढ़ाओ नशा...

10-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

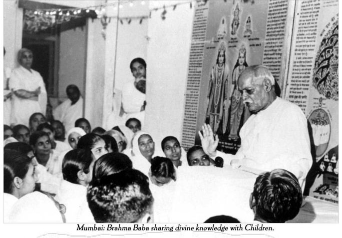

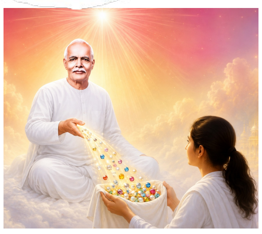

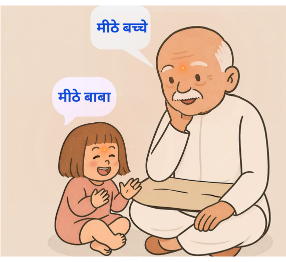

नर + सिंह (दोनों)

Experience of Sweet Brahma baba

ओम् शान्ति। ऊंच ते ऊंच बेहद के बाप के सम्मुख तुम सब बच्चे बैठे हो। तुम कितने भाग्यशाली हो जो ऐसा बाप मिला है। तुम ज्ञान सागर बाप के पास आये हो ज्ञान रत्नों से झोली भरने, कमाई करने। बाप तुम मीठे-मीठे बच्चों को कितना ऊंच ले जाते हैं। बाप तो सिर्फ तुम बच्चों को ही देखते हैं, उनको तो किसी को याद नहीं करना है। इनकी आत्मा को तो बाप को याद करना है। बाप कहते हैं हम दोनों तुम बच्चों को ही देखते हैं। मुझ आत्मा को तो साक्षी हो नहीं देखना है परन्तु बाप के संग में मैं भी ऐसे देखता हूँ। बाप के साथ रहता तो हूँ ना। उनका बच्चा हूँ तो साथ में देखता हूँ। मैं विश्व का मालिक बन घूमता हूँ। जैसेकि मैं ही यह करता हूँ। मैं दृष्टि देता हूँ। देह सहित सब कुछ भूलना होता है। बाकी बाप और बच्चा जैसे एक हो जाते हैं। तो बाप समझाते हैं मीठे बच्चे खूब पुरुषार्थ करो। जैसे बाप अपकारियों पर भी उपकार करते हैं ऐसे तुम भी फालो फादर करो, सुखदाई बनो। आपस में कभी लड़ो झगड़ो नहीं। अपने को आत्मा समझ इस देह को भूलते जाओ। सिवाए

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

None but Only One

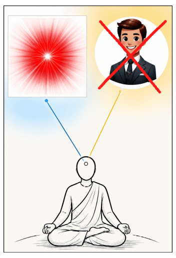

10-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

एक बाप के और कोई याद न आये। यह भी जैसे जीते जी मौत की अवस्था है। इस दुनिया से जैसे मर गये। कहते भी हैं आप मुये मर गई दुनिया। यहाँ तुमको जीते जी मरना है, शरीर का भान उड़ाते रहो। एकान्त में बैठ अभ्यास करते रहो। सवेरे एकान्त में बैठ अपने साथ बातें करो। बहुत उकीर (उमंग) से बाप को याद करो। "बाबा बस अभी हम आपकी गोद में आया कि आया।" बस एक की याद में ही शरीर का अन्त हो... इसको कहा जाता है *Definition of* एकान्त। बाप को याद करते-करते यह शरीर रूपी चमड़ी छूट जायेगी।

अभी नहीं तो कभी नहीं

Wake up, 90 years lapsed..

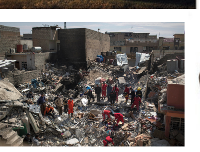

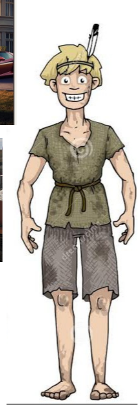

तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया, पुरानी देह खलास हो जानी है। बाकी पुरुषार्थ के लिए थोड़ा सा संगम का समय है। बच्चे पूछते हैं बाबा यह पढ़ाई कब तक चलेगी? बाबा कहते जब तक दैवी राजधानी स्थापन हो जाए तब तक सुनाते रहेंगे, फिर ट्रांसफर होंगे नई दुनिया में। यह पुराना शरीर

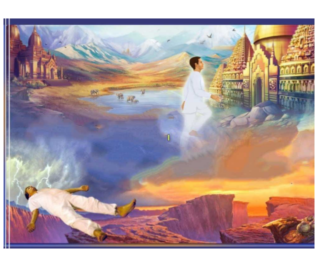

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

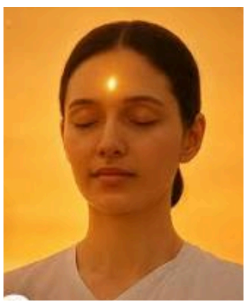

है, कुछ न कुछ कर्मभोग भी चलता रहता है, इसमें

Attention..!

बाबा मदद करे - यह उम्मींद नहीं रखनी चाहिए। देवाला निकला, बीमार हुआ - बाप कहेंगे यह तुम्हारा हिसाब-किताब है। हाँ फिर भी योग से

Point for Life time   m.m.m....imp.

आयु बढ़ेगी। अपनी मेहनत करो, कृपा मांगो नहीं। बाप को जितना याद करेंगे इसमें ही कल्याण है,

As much As possible

जितना हो सके योगबल से काम लो। भक्ति मार्ग में गाते हैं मुझे पलकों में छिपा लो... प्रिय चीज़ को नूरे रत्न, प्राण प्यारा कहते हैं। यह बाप तो बहुत प्रिय है, परन्तु है गुप्त। उनके लिए लव ऐसा होना

m.m.m....imp.   Point for Life time

चाहिए जो बात मत पूछो। बच्चों को तो बाप अपनी पलकों में छिपाते ही हैं। पलकें कोई यह आंखें नहीं, यह तो बुद्धि की बात है। मोस्ट बील्वेड निराकार बाप हमें पढ़ा रहे हैं। वह ज्ञान का सागर, सुख का सागर, प्यार का सागर है। ऐसे मोस्ट बील्वेड बाप के साथ कितना प्यार होना चाहिए। बच्चों की कितनी निष्काम सेवा करते हैं। तुम बच्चों को हीरे जैसा बनाते हैं। कितना मीठा बाबा है। कितना निरहंकारी बन तुम बच्चों की सेवा करते हैं, तो तुम बच्चों को भी इतने प्यार से सेवा

सागर की बाहों में मौज़ें है जितनी
हमको भी तुमसे मोहब्बत है उतनी
के ये बेक़रारी ना अब होगी कम
बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम

आपको खा जाऊ मीठे बाबा...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा mp.

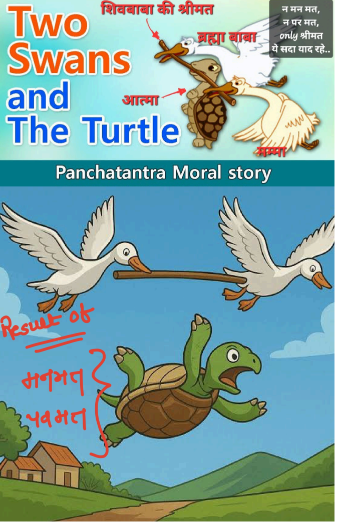

10-08-2026 प्रात:मुरली

बापदादा" मधुबन

करनी चाहिए। श्रीमत पर चलना चाहिए। कहाँ अपनी मत दिखाई तो तकदीर को लकीर लग जायेगी।

ये तो पक्का कर लो..

Refer last Page

तुम बच्चों का आपस में बहुत-बहुत रूहानी प्रेम होना चाहिए, परन्तु देह अभिमान में आने के कारण वह प्यार एक दो में नहीं रहता है। एक दो की खामियां ही निकालते रहते हैं, फलाना ऐसा है, वह यह करता है...

याद करो...

तुम जब देही-अभिमानी थे तो किसकी खामियां नहीं निकालते थे। आपस में बहुत प्यार था, अब फिर वही अवस्था धारण करनी है। पहले तुम कितने मीठे थे फिर ऐसा मीठा, सदा सुखदाई बनो। देह अभिमान में आने से दु:खदाई बनें तो तुम्हारी रूहानी खुशी गायब हो गई। लाइफ भी छोटी हो गई। अब फिर बाप आया है तुम्हें सतोप्रधान बनाकर सदा सुखदाई बनाने। तुम जितना बाप को याद करते रहेंगे उतना खामियां निकलती जायेंगी। मतभेद निकलता

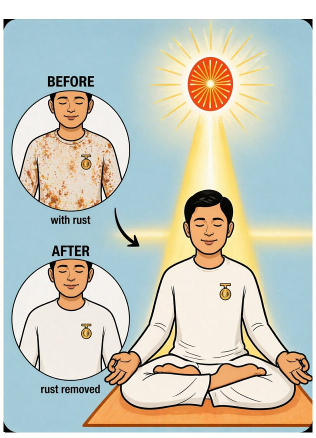

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

जायेगा। यह पक्का याद रहे हम भाई-भाई हैं। आत्मा भाई-भाई को देखने से सदैव गुण ही दिखाई पड़ेंगे। सबको गुणवान बनाने की कोशिश करो। अवगुणों को छोड़ गुणों को धारण करो। कभी किसी की ग्लानी नहीं करो। कोई-कोई में ऐसी खामियां हैं जो खुद भी समझ नहीं सकते हैं, वह तो अपने को बहुत अच्छा समझते हैं परन्तु खामी होने के कारण कहाँ न कहाँ उल्टा बोल निकल पड़ता है। सतोप्रधान अवस्था में यह बातें नहीं होती। अपने आपको देखो हम कितने मीठे बने हैं? हमारा बाप के साथ कितना लव है? बाप से लव ऐसा हो जो एकदम चटका रहे। "बाबा आप हमको कितना ऊंच समझदार बनाते हो, स्वर्ग का मालिक बनाते हो।" ऐसे अन्दर में बाप की महिमा कर गद-गद होना चाहिए। रूहानी खुशी में रहना चाहिए। गाते भी हैं खुशी जैसी खुराक नहीं। बाप के मिलने की भी कितनी खुशी रहनी चाहिए। संगम पर ही तुम बच्चों को 21 जन्मों के लिए सदा खुशी में रहने की खुराक मिल जाती है फिर कोई को किसी बात की चिंता नहीं रहती है। अभी

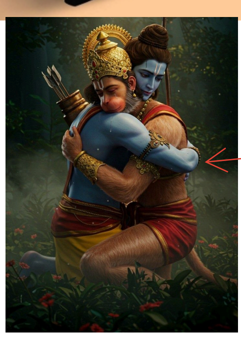

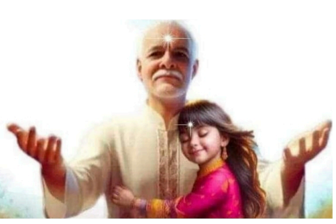

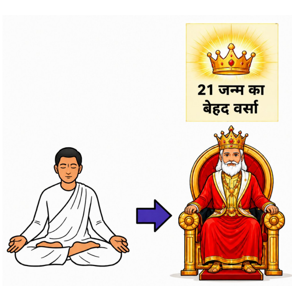

m.m.m....imp.

10-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

कितनी चिंतायें हैं इसलिए उसका असर शरीर पर भी आता है। तुमको तो कोई बात की चिंता नहीं। यह खुशी की खुराक तुम एक दो को खिलाते रहो। एक दो की यह जबरदस्त खातिरी करनी है। ऐसी खातिरी मनुष्य, मनुष्य की कर नहीं सकते। तुम बाप की श्रीमत पर यह खातिरी करते हो। खुश खैराफत भी यह है - किसको बाप का परिचय देना। यह ज्ञान और योग की फर्स्टक्लास वण्डरफुल खुराक है। यह खुराक एक ही रूहानी सर्जन द्वारा मिलती है। मनमनाभव, मध्याजी भव - बस दो वर्शन्स की यह खुराक है। मोस्ट बील्वेड बाप से विश्व की बादशाही मिलती है, यह कोई कम बात थोड़ेही है। यह दो वचन ही नामीग्रामी हैं। इन दो वचनों से तुम एवरहेल्दी, एवरवेल्दी बन जाते हो। तो तुम बच्चों को इन बातों का सिमरण कर हर्षित रहना चाहिए। गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ इज दी बेस्ट - यह गायन भी अभी का है। जितना हो सके एक दो को यह रूहानी खुराक पहुंचाओ, एक दो की उन्नति करो, टाइम वेस्ट न करो। बड़े धीरज से, गम्भीरता से, समझ से बाप को याद

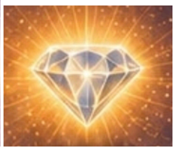

10-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

करो, अपनी जीवन हीरे जैसी बनाओ।

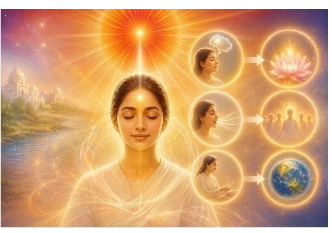

मीठे बच्चे, बाप की जो श्रीमत मिलती है उसमें गफलत नहीं करनी चाहिए। बाप का सन्देश सभी को पहुंचाना है। बाप का मैसेज सभी को मिलना तो है ना। मैसेज बहुत सहज है - सिर्फ बोलो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो और कर्मेन्द्रियों से मन्सा-वाचा-कर्मणा कोई भी बुरा कर्म नहीं करो। एक दिन तुम्हारे इस साइलेन्स बल का आवाज निकलेगा। दिनप्रतिदिन तुम्हारी उन्नति होती जायेगी। तुम्हारा नाम बाला होता जायेगा। सब समझेंगे यह अच्छी संस्था है, अच्छा काम कर रहे हैं, रास्ता भी बहुत सहज बताते हैं। यह ब्राह्मणों का झाड बहुत बढ़ता जायेगा, प्रजा बनती रहेगी। सेन्टर्स बहुत वृद्धि को पायेंगे। तुम्हारी प्रदर्शनी भी गांव-गांव में होगी। तुम बच्चों को बड़ी भारी सर्विस करनी है। तुम्हारे नये-नये सेन्टर्स खुलते जायेंगे, जिसमें अनेक मनुष्य आकर अपनी

Coming soon...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

जीवन हीरे जैसी बनाते रहेंगे। तुम्हें बहुत प्यार से एक-एक की सम्भाल करनी है। कहाँ किसी बिचारे के पैर खिसक न जायें। जितने जास्ती सेन्टर्स होंगे उतना जास्ती आकर जीयदान पायेंगे। जब आप बच्चों का प्रभाव निकलेगा तो बहुत बुलायेंगे कि यहाँ आकर हमको मनुष्य से देवता बनाने का राजयोग सिखाओ। आगे चलकर बहुत धूमधाम होगी कि वही भगवान आकर आबू में पधारे हैं।

Coming soon... **Are you ready?**

तुम बच्चे देख रहे हो कि इस समय पुरानी दुनिया में अनेक इन्टरनेशनल रोले हैं। अब यह सभी रोले खत्म होने हैं, इसकी तुम्हें कोई भी फिकरात नहीं करनी है। तुम सबको सुनाओ कि इसकी परवाह नहीं करो, अब यह पुरानी दुनिया गई कि गई, इसमें मोह नहीं रखना है, अगर मोह होगा, हृदय शुद्ध नहीं होगा तो अपार खुशी भी नहीं रहेगी। बच्चों को अथाह ज्ञान धन का खजाना मिलता रहता है तो अपार खुशी होनी चाहिए। जितना हृदय शुद्ध होगा उतना औरों को भी शुद्ध बनायेंगे।

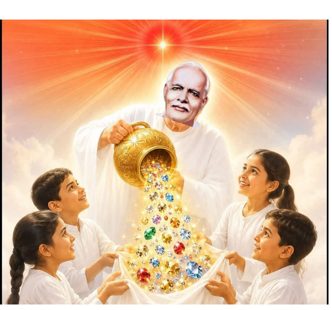

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

समझा?

10-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

योग की स्थिति से ही हृदय शुद्ध बनता है। तुम बच्चों को योगी बनने, बनाने का भी शौक होना चाहिए। अगर देह में मोह है, देह अभिमान रहता है तो समझो हमारी अवस्था बहुत कच्ची है। देही अभिमानी बच्चे ही सच्चा डायमण्ड बनते हैं इसलिए जितना हो सके देही अभिमानी बनने का अभ्यास करो। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

10-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

धारणा के लिए मुख्य सार:-

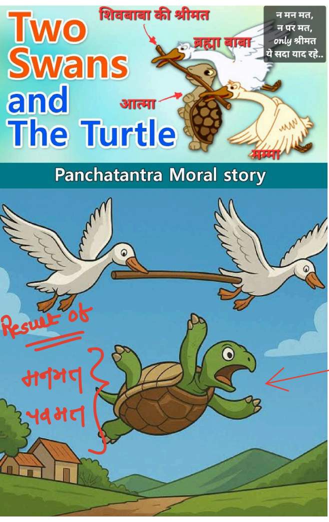

1) बाप समान निरहंकारी बन बहुत प्यार से सबकी सेवा करनी है। श्रीमत पर चलना है। अपनी मत पर चलकर तकदीर को लकीर नहीं लगानी है।

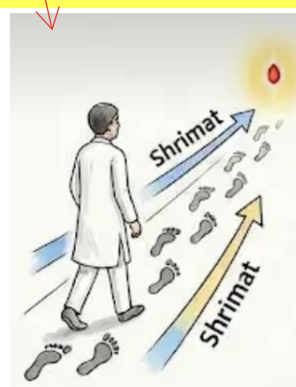

2) संगम पर बाप द्वारा जो खुशी की खुराक मिली है, वही खुराक खाते और खिलाते रहना है। अपना टाइम वेस्ट नहीं करना है। बड़े धीरज से, गम्भीरता से, समझ से बाप को याद कर अपनी जीवन हीरे जैसी बनानी है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

10-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान: आसक्ति को अनासक्ति में परिवर्तन करने वाले शक्ति स्वरूप भव

शक्ति स्वरूप बनने के लिए आसक्ति को अनासक्ति में बदली करो।

अपनी देह में, सम्बन्धों में, कोई भी पदार्थ में यदि कहाँ भी आसक्ति है तो माया भी आ सकती है और शक्ति रूप नहीं बन सकते,

Then only

इसलिए पहले अनासक्त बनो तब माया के विघ्नों का सामना कर सकेंगे।

विघ्नों के आने पर चिल्लाने वा घबराने के बजाए शक्ति रूप धारण कर लो तो विघ्न-विनाशक बन जायेंगे

स्लोगन:-रहम नि:स्वार्थ और लगावमुक्त हो - स्वार्थ वाला नहीं।

m.m.m....imp.

Point to ponder deeply...

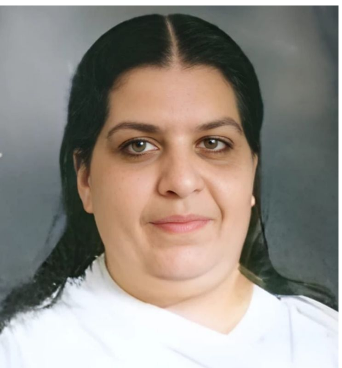
निर्मल दृष्टि से विश्व की कालिमा हरने वाली मातेश्वरी जी

10-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मातेश्वरी जी के अनमोल महावाक्य

"जीवन की आश पूर्ण होने का सुहावना समय"

हम सभी आत्माओं की बहुत समय से यह आश थी कि जीवन में सदा सुख शान्ति मिले, अब बहुत जन्म की आशा कब तो पूर्ण होगी। अब यह है हमारा अन्तिम जन्म, उस अन्त के जन्म की भी अन्त है। ऐसा कोई नहीं समझे मैं तो अभी छोटा हूँ, छोटे बड़े को सुख तो चाहिए ना, परन्तु दु:ख किस चीज़ से मिलता है, उसका भी पहले ज्ञान चाहिए। अब तुमको नॉलेज मिली है कि इन पाँच विकारों में फंसने कारण यह जो कर्मबन्धन बना हुआ है, उनको परमात्मा की याद अग्नि से भस्म करना है, यह है कर्मबन्धन से छूटने का सहज उपाय। इस सर्वशक्तिवान बाबा को चलते फिरते श्वांसों श्वांस याद करो। अब यह उपाय बताने की सहायता खुद परमात्मा आकर करता है, परन्तु इसमें पुरुषार्थ तो हर एक आत्मा को करना है। परमात्मा तो बाप,

Most imp

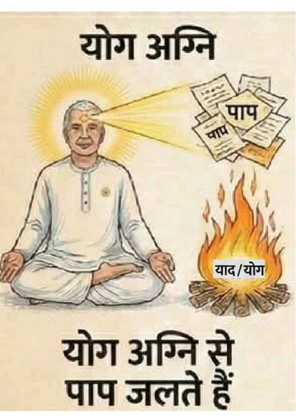

याद

-: Double Lock :-

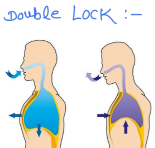

सेवा

शिवबाबा से सकाश लो

श्रृष्टि को सकाश दो

ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

10-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

टीचर, गुरु रूप में आए हमें वर्सा देते हैं। तो पहले उस बाप का हो जाना है, फिर टीचर से पढ़ना है जिस पढ़ाई से भविष्य जन्म-जन्मान्तर सुख की प्रालब्ध बनेगी अर्थात् जीवनमुक्ति पद में पुरुषार्थ अनुसार मर्तबा मिलता है। और गुरु रूप से पवित्र बनाए मुक्ति देते हैं। तो इस राज़ को समझ ऐसा पुरुषार्थ करना है। यही टाइम है पुराना खाता खत्म कर नई जीवन बनाने का, इसी समय जितना पुरुषार्थ कर अपनी आत्मा को पवित्र बनायेंगे उतना ही शुद्ध रिकार्ड भरेगा फिर सारा कल्प चलेगा। तो सारे कल्प का मदार इस समय की कमाई पर है। देखो, इस समय ही तुम्हें आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान मिलता है, हमको सो देवता बनना है और अपनी चढ़ती कला है फिर वहाँ जाके प्रालब्ध भोगेंगे। वहाँ देवताओं को बाद का पता नहीं पड़ता कि हम गिरेंगे, अगर यह पता होता कि सुख भोगना फिर गिरना है तो गिरने की चिंता में सुख भी भोग नहीं सकेंगे। तो यह ईश्वरीय कायदा रचा हुआ है कि मनुष्य सदा चढ़ने का पुरुषार्थ करता है अर्थात् सुख के लिये कमाई करता है। परन्तु ड्रामा

जागो जागो, समय पहचानो...
अभी नहीं तो कभी नहीं

समझा?
Now, Choice is All yours...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

10-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

में आधा-आधा पार्ट बना पड़ा है, जिस राज़ को हम जानते हैं, परन्तु जिस समय सुख की बारी है तो पुरुषार्थ कर सुख लेना है, यह है पुरुषार्थ की खूबी। एक्टर का काम है एक्ट करने समय सम्पूर्ण खूबी से पार्ट बजाना, जो देखने वाले हेयर हेयर (वाह वाह) करें, इसलिए हीरो हीरोइन का पार्ट देवताओं को मिला है, जिन्हों का यादगार चित्र गाया और पूजा जाता है। निर्विकारी प्रवृत्ति में रह कमल फूल समान अवस्था बनाना, यही देवताओं की खूबी है। इस खूबी को भूलने से ही भारत की ऐसी दुर्दशा हुई है, अब फिर से ऐसी जीवन बनाने वाला खुद परमात्मा आया हुआ है, अब उनका हाथ पकड़ने से जीवन नईया पार होगी। अच्छा - ओम् शान्ति।

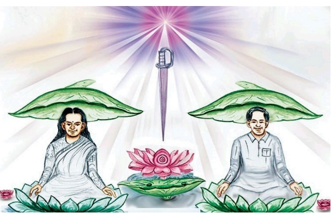

10-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

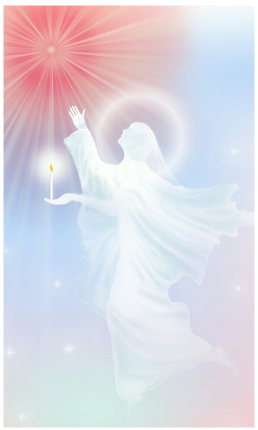

मैं संगमयुगी ब्राह्मण हूँ, यह व्यर्थ संकल्प, अपवित्रता के संस्कार शूद्र के संस्कार व स्वरूप हैं।

ऐसा अनुभव हो कि यह अपवित्रता और विस्मृति के संस्कार, जो मेरे अर्थात् ब्राह्मणपन के नहीं लेकिन शूद्रपन के हैं, उनको मेरा समझते हो तो माया के वश होकर परेशान होते हो। Here is the Fault

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans July 26 → Click

All अव्यक्त इशारे July 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

(आ) मुख्य सब्जेक्ट है ही 'याद' की। बाप-दादा अमृतवेले जब चक्र लगाते हैं तो थोड़ा पॉवरफुल वायब्रेशन्स की कमी दिखाई देती है। नेमीनाथ तो बन जाते हैं, लेकिन अनुभवीमूर्त बनो। नियम प्रमाण तो जबरदस्ती हो गया ना! अगर अनुभव हो गया, तो अपनी लगन में बैठेंगे। जिस बात का अनुभव होता है तो, न चाहते भी वह बात अपनी तरफ खींचती है। जैसे Example वाचा सर्विस से खुशी का अनुभव होता है तो, न चाहते भी उस तरफ दौड़ते हो ना! ऐसे ही अमृतवेले को पॉवरफुल बनाओ जिससे मनसा सेवा का अनुभव बढ़ा सकेंगे। लास्ट में वाचा सेवा का चान्स नहीं होगा। मनसा सेवा पर सर्टीफिकेट मिलेगा।

May I have your Attention Please..!

Method/Process/Instrument   Outcome/Output/Result

29-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- मनन द्वारा बाप की प्रापर्टी को अपनी प्रापर्टी बनाने वाले दिव्य बुद्धिवान भव

Finale Achievement

बाप द्वारा जो भी खजाना मिलता है,

उसे मनन करो तो अन्दर समाता जायेगा।

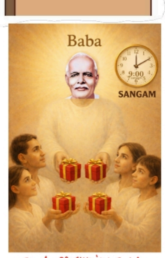

Equal opportunity For All

प्रापर्टी तो सबको एक जैसी मिली हुई है लेकिन जो मनन करके उसे अपना बनाते हैं, उन्हें उसका नशा और खुशी रहती है इसलिए कहा जाता है - अपनी घोट तो नशा चढ़े। m.m.m....imp.

Here is the Difference

जो मनन की मस्ती में सदा मस्त रहते हैं उन्हें दुनिया की कोई भी चीज़, उलझन आकर्षित नहीं कर सकती। उन्हें दिव्य बुद्धि का वरदान स्वत: मिल जाता है।

Advantages

भक्ति मार्ग में हनुमानजी की इतनी महिमा क्यों है?

क्योंकि उन्होंने अपनी बुद्धि को कहीं पर चलाया नहीं व भगवान के सामने कभी कोई भी तर्क नहीं दिया और जो राम ने कहा उसको As it is करके दिखाया इसलिए तो भक्त लोग हनुमान चालीसा/महिमा के पहले ही दोहे में ये स्पष्ट कर देते है कि हे हनुमान जी ये सारी महिमा आपकी तब ही है जब आप अपनी बुद्धि को श्री राम के सामने नहीं चलाते...
(बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवनकुमार ।) हे हनुमानजी, हम आपको (राम के सम्मुख) बुद्धि हीन जानकर पुकार रहे हैं...क्योंकि श्री राम के आगे आपने कभी भी अपनी बुद्धि नहीं चलाई और जो भी श्री राम ने कहा उसको हाँ जी कहकर As it is follow किया (नहीं तो किसीको बुद्धिहीन कहना तो जैसे उसकी insult है लेकिन दुनियवी रीति की वही insult हनुमान के लिए सभी शक्तियों और महिमा का स्त्रोत है।)

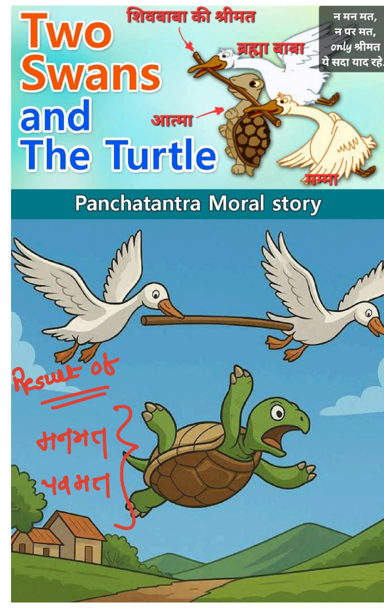

भगवान के सम्मुख बुद्धि को नहीं चलाना ये ही सबसे बड़ी बुद्धिमानी है । ये पक्का समझ लो..

फिर उनकी महिमा जो भी है _जय हनुमान ज्ञान गुण सागर, जय कपीस तिहुं लोक उजागर_ शुरू करते है...

तो सबसे ऊंचा समर्पण मन-बुद्धि-संस्कारो का है। बाप दादा जो कहे *वो ही* करना है,
अगर भरी दोपहरी धूप में बापदादा कहे की "ये रात है" तो हमारे लिए भी रात है, एक संकल्प मात्र भी कुछ और न चले। क्योंकि माया के चक्रव्यूह को समझने के लिए हम असमर्थ है और वो सर्वशक्तिमान, मायापति सभी चक्रव्यूह को जानते है और चक्रव्यूह से निकलने का रास्ता छुपा है बापदादा की श्रीमत में, तो वो जो भी कहेंगे उसमें हमारा कल्याण निश्चित ही समाया हुआ है।

भगवान के सामने कोई भी तर्क नहीं देना है...
वो जो कहे उसमें हाँ बाबा, हाजीर बाबा, अभी बाबा...

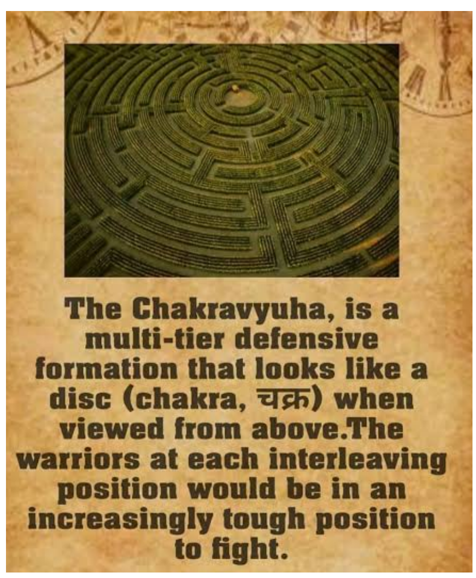

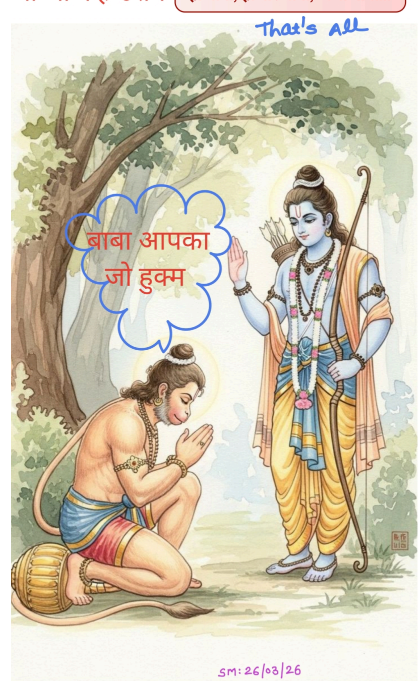

प्रसंग: जब हनुमानजी लंका से लौटकर रामजी को सीताजी का समाचार देते हैं, तब प्रभु प्रेम से उन्हें उठाने के लिए अपना हाथ उनके सिर पर रखते हैं।

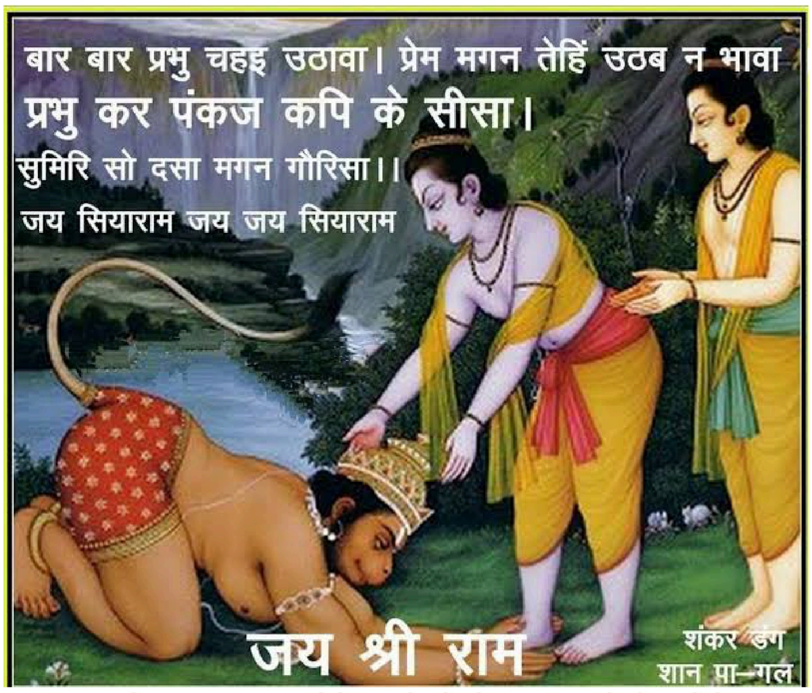

प्रभु उनको बार-बार उठाना चाहते हैं, परंतु प्रेम में डूबे हुए हनुमान जी को चरणों से उठना सुहाता नहीं। प्रभु का करकमल हनुमान जी के सिर पर है। उस स्थिति का स्मरण करके शंकरजी प्रेममग्न हो गए॥1॥

सावधान मन करि पुनि संकर। लागे कहन कथा अति सुंदर॥
कपि उठाई प्रभु हृदयँ लगावा। कर गहि परम निकट बैठावा॥2॥
भावार्थ
फिर मन को सावधान करके शंकरजी अत्यंत सुंदर कथा कहने लगे- हनुमान जी को उठाकर प्रभु ने हृदय से लगाया और हाथ पकड़कर अत्यंत निकट बैठा लिया॥2॥

कहु कपि रावन पालित लंका। केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना। बोला बचन बिगत अभिमाना॥3॥
भावार्थ
हे हनुमान! बताओ तो, रावण के द्वारा सुरक्षित लंका और उसके बड़े बाँके किले को तुमने किस तरह जलाया? हनुमान जी ने प्रभु को प्रसन्न जाना और वे अभिमानरहित वचन बोले- ॥3॥

साखामग कै बड़ि मनुसाई। साखा तें साखा पर जाई॥
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा। निसिचर गन बधि बिपिन उजारा॥4॥
भावार्थ
बंदर का बस, यही बड़ा पुरुषार्थ है कि वह एक डाल से दूसरी डाल पर चला जाता है। मैंने जो समुद्र लाँघकर सोने का नगर जलाया और राक्षसगण को मारकर अशोक वन को उजाड़ डाला,॥4॥

सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछू मोरि प्रभुताई॥5॥
भावार्थ
यह सब तो हे श्री रघुनाथजी! आप ही का प्रताप है। हे नाथ! इसमें मेरी प्रभुता (बड़ाई) कुछ भी नहीं है॥5॥

ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल।
तव प्रभावँ बड़वानलहि जारि सकइ खलु तूल॥33॥
भावार्थ
हे प्रभु! जिस पर आप प्रसन्न हों, उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। आपके प्रभाव से रूई (जो स्वयं बहुत जल्दी जल जाने वाली वस्तु है) बड़वानल को निश्चय ही जला सकती है (अर्थात् असंभव भी संभव हो सकता है)॥33॥

विनम्रता/निमित्त भाव का सबसे श्रेष्ठ उदाहरण